Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक किया

मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९

खोदाई: सेना के चले जाने के बाद उस व्यक्ति को कैसा महसूस हुआ? आपके अनुसार शहर के लोगों को कौन सा प्रश्न सबसे अधिक परेशान करता है? वे क्यों चाहते थे कि मसीह उन्हें अकेला छोड़ दे? यीशु क्यों चाहते थे कि चंगा आदमी अपने घर लौट आये?

चिंतन: यदि आप केवल एक चीज़ से मुक्त हो सकें, तो वह क्या होगी? जीवित मसीहा का सामना करना परेशान करने वाला हो सकता है। फिर भी, बेचैनी के साथ उसके नाम से उपचार और पुनर्स्थापना आ सकती है। क्या आप येशुआ से कहेंगे कि वह आपको अकेला छोड़ दे क्योंकि आप अपनी समस्याओं से निपटना नहीं चाहते हैं, या क्या आपको किसी भी चीज़ से ज्यादा उसकी ज़रूरत है?

कफरनहूम से रवाना होने के बाद, सूर्यास्त के बाद चमत्कार समाप्त नहीं हुए। पहली बार हमारे सामने राक्षसी अवस्था का विस्तृत वर्णन है। यह चार अलग-अलग अवसरों में से दूसरा है जब हम यीशु को सुसमाचारों में अन्यजातियों की सेवा करते हुए देखते हैं। यीशु दिखाएंगे कि वह शैतान के अधीन नहीं हैं, बल्कि शैतान से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। झील पर आए तूफान के बाद भोर होने से पहले प्रभु ने दो राक्षसी लोगों को ठीक किया। यीशु द्वारा अपने शिष्यों की उपस्थिति में किए गए ये चमत्कार उनके विश्वास को मजबूत करने में मदद करेंगे।

वे झील के पार गदरेन्स के क्षेत्र में चले गए, जो गलील से समुद्र के पार है (मरकुस ५:१; लूका ८:२६)। गदारेनेस का क्षेत्र यब्बोक नदी के थोड़ा उत्तर में था (उत्पत्ति Hv– याकूब एसाव से मिलने के लिए तैयार है पर मेरी टिप्पणी देखें)। मत्ती हमें बताता है कि वह गडरेनीज़ के क्षेत्र में दूसरी तरफ पहुंचा (मत्तीयाहू ८:२८ए)। किनेरेट झील के यूनानी हिस्से को तीन क्षेत्रों – गेरासा, गदारा और गेर्गेसा में विभाजित किया गया था – ताकि एक ही क्षेत्र का नाम तीनों के लिए उचित रूप से रखा जा सके। हालाँकि बाइबल विशेष रूप से सटीक शहर का नाम नहीं बताती है, यह संभवतः गेरासा का छोटा शहर था क्योंकि इसके ठीक दक्षिण में खड़ी चट्टानें हैं जो यहाँ की भौगोलिक सेटिंग में फिट बैठती हैं। इस चट्टान की ओर भाग रहे भयभीत सूअरों का झुंड जल्दी से रुकने में सक्षम नहीं हो सका, और अनिवार्य रूप से नीचे झील में फेंक दिया गया होगा।

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 2

जहां यीशु और उनके प्रेरितों उतरे, उसके चारों ओर का पूरा देश चूना पत्थर की गुफाओं से घिरा हुआ है, जिनका उपयोग मृतकों की कब्रों के रूप में किया जाता है। यह कहानी तब और भी विचित्र और भयावह हो जाती है जब इसे रात के साये में घटित होता हुआ देखा जाए। रब्बियों ने सिखाया कि बुरी आत्माएँ विशेष रूप से एकांत, उजाड़ स्थानों और कब्रों के बीच में रहती हैं। उनका यह भी मानना था कि मुख्य रूप से रात में ही राक्षस कब्रगाहों पर अपना डेरा जमाते हैं।

जब प्रभु और उनके प्रेरितों शाम को कफरनहूम से नाव द्वारा दूसरी ओर चले गए, तो उनका गंतव्य गेरासा का छोटा शहर था जो गलील सागर के उत्तरपूर्वी तट पर था। लेकिन तूफान के कारण देरी होने पर भी रास्ता केवल छह मील दूर था और वहां पहुंचने में पूरी रात नहीं लग सकती थी। तो अगर हम मानते हैं कि उद्धारकर्ता और उनके साथी सूर्योदय से पहले गेरासा में उतरे थे, जब शायद चांदी का चंद्रमा अजीब दृश्य पर अपनी हल्की रोशनी डाल रहा था, यह सूर्योदय के बाद सुबह का समय होगा जब गेरासा के सभी लोग विनती करने लगे यीशु ने उन्हें छोड़ दिया (मत्ती ८:३४; मरकुस ५:१७; लूका ८:३७ए)। इससे उन चमत्कारों के लिए भी पर्याप्त समय मिलेगा जो उसी दिन उनकी वापसी के बाद कफरनहूम में हुए थे। इसलिए, सभी परिस्थितियाँ हमें इस निष्कर्ष पर ले जाती हैं कि राक्षसी का उपचार रात में हुआ था।



वे अभी उतरे ही थे कि पास की कब्रों से उग्र
पागलपन और मानवीय संकट की खून जमा देने वाली चीखें सुनाई देने लगीं। चंद्रमा की मंद रोशनी में उन्होंने दो दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्तियों को कब्रों से यीशु से मिलने के लिए आते देखा। मत्ती हमें बताता है कि दो आदमी कब्रों से बाहर आए (मत्तीयाहू ८:२८बी), लेकिन मरकुस और लूका ने दो लोगों में से अधिक प्रभावशाली पर ध्यान केंद्रित करना चुना (लूका ८:२७ए; मरकुस ५:२-३ए)। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि येशुआ ने कभी किसी को बीमारी होने या किसी राक्षस द्वारा नियंत्रित होने के लिए दोषी नहीं ठहराया। उन्होंने माना कि वे अपने नियंत्रण से परे शक्तियों के शिकार थे और उन्हें प्रोत्साहन या निंदा की नहीं, बल्कि मुक्ति की आवश्यकता थी।

वे इतने हिंसक थे कि कोई भी उस रास्ते से नहीं गुजर सकता था। लंबे समय तक इस आदमी ने कपड़े नहीं पहने थे या घर में नहीं रहा था, बल्कि कब्रों में रहता था। यह स्पष्ट है कि ऐसी कब्रों की गंदी और प्रदूषित प्रकृति, उनके सभी भयानक और भयानक

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 3

संबंधों के साथ, उसकी स्थिति की प्रकृति को और खराब कर देगी। अपने हिंसक व्यवहार के लिए मशहूर, अब कोई भी इतना ताकतवर नहीं था कि उसे वश में कर सके। क्योंकि उसके हाथ और पैर अक्सर जंजीरों से बंधे होते थे, लेकिन अलौकिक शक्ति से उसने जंजीरों को तोड़ दिया और उसके पैरों की बेड़ियाँ तोड़ दीं (मत्ती ८:२८बी; मरकुस ५:३बी-४; लूका ८:२७बी)। यह आदमी, जो लंबे समय से पीड़ित था, किसी भी तरह की मदद से परे था जो साधारण इंसान उसे दे सकता था। यह एक आध्यात्मिक युद्ध था।

वह रात-दिन कब्रों और पहाड़ियों के बीच ऊंचे स्वर से चिल्लाता और अपने आप को पत्थरों से काटता था, जिससे उसका पूरा शरीर घावों से भर जाता था (मरकुस ५:५)। जबकि दुष्ट की शक्ति वास्तविक है, बाइबिल के इतिहास में राक्षसी गतिविधि अलग-अलग समय पर भिन्न होती है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि, मसीह के आगमन के साथ, राक्षसों की उपस्थिति बढ़ जाएगी क्योंकि प्रतिद्वंद्वी ने उन सभी का विरोध किया जो यहोवा ने प्रभु के माध्यम से पूरा करने की कोशिश कर रहा है।

जैसे ही येशुआ तट पर पहुंचा, अप्रतिरोध्य शक्ति के साथ राक्षसी लोग उसकी ओर आकर्षित हो गए। जब दानव ने मसीह को दूर से देखा, तो उसके पास जो आदमी था वह भाग गया और प्रभु के चरणों में अपने घुटनों पर गिर गया (ग्रीक: प्रोस्क्यूनेओ, जिसका अर्थ है चेहरे को चूमना) (मरकुस ५:६; लूका ८:२८ए)। पहले तो ऐसा लगा होगा कि उसके इरादे शत्रुतापूर्ण थे। चिल्लाने वाले पागल के हमले ने बारह के नए बरामद हुए आत्मविश्वास को ख़त्म कर दिया होगा। हम केवल उनके आश्चर्य की कल्पना कर सकते हैं, जब पास आकर उसने खुद को येशुआ के चरणों में फेंक दिया। यह तथ्य कि उस व्यक्ति ने यीशु को दूर से देखा था, उसे उसकी पूजा करने के लिए प्रेरित नहीं करेगा। लेकिन जैसे-जैसे वह करीब आता गया, आध्यात्मिक गतिशीलता बदल गई। मनुष्य के अंदर के राक्षसों ने मसीहा को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचान लिया! तो राक्षसी, एक निराशाजनक स्थिति में होने के कारण, जिसे अनंत काल के लिए शापित होना तय था, आत्माओं के विनाशक के सहयोगियों में से एक, उसने परमेश्वर के पुत्र के सामने अपने घुटने टेक दिए। आज कुछ लोग यह विश्वास नहीं करते कि येशुआ हा-मेशियाक परमेश्वर का पुत्र है, लेकिन राक्षस ऐसा मानते हैं!

यह वही बात है जो रब्बी शाऊल तब बोल रहे थे जब उन्होंने राक्षसों सहित हमारे प्रभु यीशु की सार्वभौमिक पूजा का उल्लेख किया था कि यीशु के नाम पर स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हर एक घुटना झुके (फिलिप्पियों २:१०)। अब भी वे उनके सामने घुटने टेक रहे हैं। अंतिम विश्लेषण में, यह राक्षसी व्यक्ति नहीं था जो मुक्तिदाता के चरणों में घुटनों के बल गिरा था। वह कई राक्षसों के नियंत्रण में था, जो परमेश्वर के पुत्र के प्रति श्रद्धा का स्रोत थे।

उनके द्वारा नियंत्रित होकर वह अपनी ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, “हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, तुम हमसे क्या चाहते हो?” उनके प्रश्न से: क्या आप नियत समय से पहले हमें यातना देने के लिए यहां आए हैं (मत्तीयाहु ८:२९; मरकुस

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 4

५:७; लूका ८:२८बी)? उन्होंने स्वीकार किया कि वे जानते थे कि दैवीय रूप से नियुक्त समय अभी तक नहीं आया है, जब वह वास्तव में उनका न्याय करेगा और हजार साल के साम्राज्य के बाद उन्हें शाश्वत दंड से दंडित करेगा। लेकिन उस नियत समय के लिए यह बहुत जल्दी था, और फिर भी उन्हें एहसास हुआ कि मसीहा उनके वर्तमान बुरे काम को जारी रखने की अनुमति नहीं देगा।

यह स्पष्ट है कि यीशु ने इस व्यक्ति को ठीक करने के लिए एक से अधिक प्रयास किए। उन्होंने सामान्य विधि का उपयोग किया था – राक्षस को बाहर आने के लिए एक आधिकारिक आदेश। इस अवसर पर यह सफल नहीं हो सका. क्योंकि यीशु ने [राक्षसों] को मनुष्य में से बाहर आने की आज्ञा दी थी! कई बार राक्षसों ने उसे पकड़ लिया था, और यद्यपि उसके हाथ और पैर जंजीर से बंधे थे और पहरे में रखा गया था, उसने अपनी जंजीरें तोड़ दी थीं और राक्षसों द्वारा एकांत स्थानों में ले जाया गया था (मरकुस ५:८; लूका ८:२९)।

इसके बाद, यीशु ने उससे पूछा: तुम्हारा नाम क्या है (मरकुस ५:९ए; लूका ८:३०)? क्रिया अपूर्ण है, अर्थात् वह उससे पूछता रहा। मसीह ने केवल राक्षस का नाम पूछकर मानक दृष्टिकोण का उपयोग किया। यहां तात्पर्य यह है कि राक्षस ने बार-बार पूछने के बाद ही प्रतिक्रिया दी। सुसमाचार में यह एकमात्र घटना है जिसमें यीशु ने एक राक्षस के साथ संवाद किया था।

यह आदमी कितना वशीभूत महसूस करता था इसका प्रमाण उसके बोलने के तरीके से पता चलता है। कभी-कभी वह एकवचन का प्रयोग करता था, मानो वह स्वयं बोल रहा हो; कभी-कभी वह बहुवचन का प्रयोग करता था, मानो उसके भीतर के सभी राक्षस बोल रहे हों। वह इतना आश्वस्त था कि राक्षस उसमें थे, उसे लगा कि वे उसके माध्यम से बोल रहे थे। जब उसका नाम पूछा गया, तो राक्षसों में से एक ने उत्तर दिया, “मेरा नाम लीजन है,” क्योंकि बहुत सारे राक्षस उसमें घुस गए थे (मरकुस ५:९बी; लूका ८:३०)। लीजियन शब्द रोमन की एक कंपनी का नाम है सैनिकों में लगभग ६,००० पुरुष शामिल थे। लीजियन शब्द का प्रयोग भीड़ शब्द की तरह किया जाता था। ऐसा लगता है कि उस अभागे आदमी में न केवल एक राक्षस ने निवास कर लिया था, बल्कि एक भीड़ ने भी ऐसा किया था। इससे पता चलता है कि यीशु शैतान से कितना अधिक शक्तिशाली है।

वे अच्छी तरह से जानते थे कि जिन लोगों के शवों पर उन्होंने निवास किया था, उन्हें बाहर करने का आदेश दिया जाने वाला था, इसलिए वे स्वयं एक समाधान लेकर आए। और उन्होंने यीशु से बार-बार विनती की कि वह उन्हें क्षेत्र से बाहर और रसातल में जाने का आदेश न दे (मरकुस ५:१०; लूका ८:३१)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में रसातल का प्रमुखता से उल्लेख किया गया है (प्रकाशितवाक्य Fb – शैतान एक हजार साल से बंधा हुआ है पर मेरी टिप्पणी देखें)।

हताशा में राक्षसों ने बचने के लिए चारों ओर देखा और पास की पहाड़ी पर लगभग दो

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 5

हजार सूअरों का एक बड़ा झुंड चरते हुए देखा (मत्ती ८:३०; मरकुस ५:११; लूका ८:३२ए)। इससे पता चलता है कि राक्षसों की संख्या बहुत बड़ी थी. इन अन्यजातियों ने डेकापोलिस, या उस क्षेत्र के दस अन्यजातियों के शहरों में मांस बाजारों के लिए सूअर पाले।

दुष्टात्माओं ने यीशु से विनती की कि उन्हें सूअरों के पास जाने दिया जाए, और उसने उन्हें अनुमति दे दी। उसने उनसे कहा: जाओ! वे उसके आदेश का विरोध करने में असमर्थ थे इसलिए बुरी आत्माएं मनुष्य से बाहर आईं और सूअरों में चली गईं (मत्तीयाहु ८:३१-३२ए; मरकुस ५:१२-१३ए; लूका ८:३२बी-३३ए)। मनुष्य को नष्ट करने में असमर्थ, उन्होंने सूअरों को नष्ट कर दिया। यह शैतान हैम कहानी है!



और सारा झुण्ड, जो लगभग दो हजार की संख्या
में था, गलील झील के किनारे से उतरकर पानी में डूब गया (मत्ती ८:३२बी; मरकुस ५:१३बी; लूका ८:३३बी)। कुछ लोगों ने येशुआ के संबंध में एक नैतिक प्रश्न उठाया है क्योंकि उसने राक्षसों को सूअरों में प्रवेश करने की अनुमति दी, जिससे हानिरहित जानवरों को उनके मालिक की संपत्ति के साथ नष्ट कर दिया गया। परन्तु परमेश्वर ने अदन की वाटिका से शैतानी अभिव्यक्ति को उसके बुरे परिणामों के साथ अनुमति दी है। अय्यूब ने पूछा क्यों, और यहोवा ने संकेत दिया कि शैतानी शक्तियों के साथ उसके व्यवहार को इस समय हमारे द्वारा पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है (अय्यूब ४०-४१)। सूअरों की सामूहिक आत्महत्या ने साबित कर दिया कि राक्षसों ने वास्तव में उस व्यक्ति को छोड़ दिया और साथ ही उसकी नीचे वर्णित स्थिति भी छोड़ दी।

ऐसी अद्भुत घटना देखने के बाद, सूअर चराने वाले लोग भाग गए और शहर और ग्रामीण इलाकों में सब कुछ बताया, जिसमें राक्षसों से ग्रस्त लोगों के साथ क्या हुआ था। ऐसी आश्चर्यजनक गवाही के साथ, यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि पूरा शहर यह देखने के लिए बाहर आया कि क्या हुआ था (मत्ती ८:३३; मरकुस ५:१४; लूका ८:३४)।

कस्बे में बड़ी हलचल मच गई। जब लोग यह देखने के लिए बाहर निकले कि क्या हुआ था, तो उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने उस आदमी को यीशु के पैरों के पास बैठे देखा, जिस पर दुष्टात्माओं की टोली का कब्ज़ा था। उसने कपड़े पहने हुए थे और उसका दिमाग ठीक था। जिन लोगों ने इसे देखा था, उन्होंने लोगों को बताया कि दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति कैसे ठीक हो गया, और उन्हें सूअरों के

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 6

बारे में भी बताया (मरकुस ५:१५ए-५:१६; लूका ८:३५ए-३६)। डॉक्टर लूका ने उनके खाते में ठीक हो गया शब्द जोड़ दिया। ग्रीक शब्द एसोथे, या बचाया, मसीहा द्वारा लाए गए उपचार-मुक्ति का वर्णन करने के लिए लूका का एक पसंदीदा शब्द है। वह आदमी न केवल उसके दुष्टात्मा-कब्जे से ठीक हो गया था, बल्कि उस हर चीज से भी ठीक हो गया था जो उसे परमेश्वर से अलग करती थी। एक जंगली आदमी एक विनम्र, शांत, आत्मविश्वासी व्यक्ति बन गया। यहां ऐसा कोई संकेत नहीं है जो बताता हो कि लोगों की प्रतिक्रिया इतने सारे सूअरों के नुकसान पर उनकी वित्तीय चिंता के कारण थी। हालाँकि वे संभवतः मौजूद थे, सूअरों के मालिकों का कभी उल्लेख नहीं किया गया है। मुद्दा राक्षसों, सूअरों या दो आदमियों का नहीं था। मुद्दा यीशु मसीह था.

हम मानेंगे कि रूपांतरित राक्षसों को देखकर लोग येशुआ के प्रति खुशी और कृतज्ञता से भर गए होंगे। लेकिन इसके विपरीत, गेरासा के लोगों ने मसीहा को राक्षसों द्वारा दिखाई गई अनिच्छुक श्रद्धा भी नहीं दी।742 उन्हें यह जानने में थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं थी कि वह कौन था, या वह उनके शहर में क्यों आया था। वे उससे कोई लेना-देना नहीं चाहते थे और गेरासा क्षेत्र के सभी लोग यीशु से उन्हें छोड़ने के लिए विनती करने लगे (मत्तीयाहु ८:३४; मरकुस ५:१७; लूका ८:३७ए)। पहले तो वे यह देखने के लिए बाहर गए कि क्या हुआ था, लेकिन जब वे प्रभु के पास आए और उस व्यक्ति को उसके सही दिमाग में देखा, तो वे डर से दूर हो गए (मरकुस ५:१५बी; लूका ८:३५बी)। क्रोधित नहीं, नाराज़ नहीं – लेकिन डरा हुआ।

अपवित्र लोग पवित्र परमेश्वर के आमने-सामने आ गए थे और वे भयभीत हो गए थे। पापी जो जानते हैं कि वे यहोवा की उपस्थिति में हैं, वे केवल अपने पाप देख सकते हैं (यशायाह Bq– मैं गंदे होठों वाला आदमी हूं पर मेरी टिप्पणी देखें), जिसके परिणामस्वरूप भय होता है।

हमें यह नहीं बताया गया कि शहर के लोग मसीहा के बारे में क्या सोचते थे। हम केवल इतना जानते हैं कि उन्हें अलौकिकता की झलक मिली थी और इससे वे घबरा गए थे। उन्होंने उसे देखा जो राक्षसों को नियंत्रित कर सकता था, जो जानवरों को नियंत्रित कर सकता था, और जो टूटे हुए दिमागों को स्वस्थ कर सकता था – और वे उससे कोई लेना-देना नहीं चाहते थे। यहाँ हम सुसमाचारों में यीशु का पहला विरोध देखते हैं। लोगों ने अपने बीच में इस अजनबी का उपहास नहीं किया या उसे सताने का प्रयास नहीं किया; वे बस उससे कोई लेना-देना नहीं चाहते थे। गलील में प्रभु की वापसी ही उनके लिए एकमात्र रास्ता बचा था।

उन लोगों के रवैये के बिल्कुल विपरीत, उन दो व्यक्तियों में से सबसे बुरा व्यक्ति जो दुष्टात्मा से ग्रस्त था, प्रभु का शिष्य बनना चाहता था। जब यीशु कफरनहूम लौटने के लिए नाव पर चढ़ रहा था, तो वह व्यक्ति जो दुष्टात्मा से ग्रस्त था, उसके साथ चलने के लिए विनती करता रहा (मरकुस ५:१८; लूका ८:३७बी-३८ए)। वह अपने उद्धार के लिए इतना आभारी था और मसीह के प्रति इतना आकर्षित था कि वह उससे अलग

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 7

होना बर्दाश्त नहीं कर सका – एक पूरी तरह से प्राकृतिक प्रतिक्रिया। लेकिन जीवन के राजकुमार की उस आदमी के लिए कुछ और ही योजनाएँ थीं।

यीशु ने उसे जाने नहीं दिया, बल्कि उसे भेज दिया क्योंकि वह उस समय अन्यजातियों के शिष्यों को स्वीकार नहीं कर रहा था (लूका ८:३८बी)। उसने कहा: अपने लोगों के पास घर जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम पर किस प्रकार दया की है। क्रियाएँ पूर्ण काल में हैं, जो निरंतर परिणामों के साथ पूर्ण क्रिया का संकेत देती हैं। महासभा द्वारा मेशियाच की आधिकारिक अस्वीकृति के बाद, उन्होंने अपने मंत्रालय का ध्यान बदल दिया (देखें En– मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन) और कहा: जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है (मरकुस ५:१९; लूका ८:३९ए) क्योंकि किसी को बताने का निषेध अन्यजातियों पर लागू नहीं होता था।

पूर्व राक्षसी को अपने ही लोगों के लिए एक प्रचारक और मिशनरी बनना था, यह एक जीवित साक्ष्य था कि जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था वह फिर भी प्यार करता था और उन्हें छुड़ाने की कोशिश करता था। इसलिए वह आदमी चला गया और डेकापोलिस में सभी को बताने लगा कि यीशु ने उसके लिए कितना कुछ किया है। और सभी लोग चकित रह गए (मरकुस ५:२०; लूका ८:३९बी)। बाद में, हम चार हजार लोगों को खाना खिलाने में इस आदमी के मंत्रालय के परिणाम देखेंगे (देखें Fu– यीशु एक मूक बधिर को ठीक करता है और चार हजार लोगों को खाना खिलाता है)।

जब गेरासा के सभी लोगों ने यीशु से उन्हें छोड़ देने की प्रार्थना की, तो उनका रवैया हमें पहले तो हैरान कर सकता है जब तक हमें एहसास नहीं होता कि कभी-कभी हमारी भी यही प्रतिक्रिया होती है। यहोवा ने हमारे जीवन में कई बार अपनी शक्ति और प्रेम दिखाया है, फिर भी ऐसे समय होते हैं जब हम अभी भी अपने दिलों को उससे दूर करके प्रतिक्रिया देते हैं। ऐसे समय में हम भी येशु को चले जाने के लिए कह रहे हैं.

प्रभु चाहते हैं कि हम क्रोध, वासना, धोखे और आत्म-केंद्रितता जैसे पापों से शुद्धिकरण और मुक्ति का अनुभव करें। अपने प्रेम के माध्यम से, परमेश्वर हमारे जीवन में इन क्षेत्रों को प्रकाश में लाएंगे और हमें इन क्षेत्रों को बदलने और ठीक होने की हमारी आवश्यकता को और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाएंगे। जैसे ही हमारी आँखें खुलती हैं, हम तब निर्णय ले सकते हैं कि क्या हम मसीह को हमें संपूर्ण बनाने की अनुमति देंगे या क्या हम अपने हृदय में उसके कार्य का विरोध करेंगे। वही पुत्र जो मिट्टी को कठोर बनाता है। . . मोम पिघला देता है.

डर ही एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो हमारे दिलों को ईश्वर से दूर कर देता है; परिवर्तन का डर या अज्ञात का डर हमें पंगु बना सकता है। हम अपने जीवन के साथ, उनके सभी पापों और समस्याओं के साथ इतने सहज हो सकते हैं कि हम ईश्वर की इच्छा को भूल जाते हैं कि हम यीशु मसीह में उनके साथ एक हो जाएं। पापियों के उद्धारकर्ता

Fg – यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो व्यक्तियों को ठीक
किया मत्ती ८:२८-३४; मरकुस ५:१-२०; लूका ८:२६-३९ | 8

हमें हमारे भय से मुक्त करने के लिए क्रूस पर मरे। वह हमें उस रिश्ते की पूर्णता तक लाना चाहता है जो हमें उसके साथ रखना चाहिए। आइए हम इस सच्चाई पर कायम रहें कि परमेश्वर के पास हमारे जीवन के लिए एक महान योजना है।

प्रभु यीशु, आपने अंधकार की शक्ति और हमें बंधन में बांधने वाली सभी जंजीरों को नष्ट कर दिया है। मेरे मन को प्रबुद्ध करने और मुझे जीवन की वह परिपूर्णता दिखाने के लिए अपनी पवित्र आत्मा भेजें जो आप अपने सभी बच्चों को प्रदान करते हैं। आमीन। वह वफ़ादार है।